निरयावलिका सूत्र (फोल्डर नं. १२२४)

मुख्य टाईटल
प्रकाशकीय
निरयावलिका – एक समीक्षात्मक अध्ययन
विषयानुक्रम
प्रथम वर्ग : कल्पिका (निरयावलिका)
प्रथम अध्ययन
राजगृहनगर, चैत्य, अशोकवृक्ष पृथ्वीशिलापट्टक ---------- ३
आर्य सुधर्मा स्वामी का पदार्पण ---------- ५
जम्बू अनगार की जिज्ञासा ---------- ५
सुधर्मा स्वामी का उत्तर ---------- ६
कुमार काल का परिचय ---------- ७
कुमार काल की रथ-मूसल संग्रामप्रवृत्ति ---------- ७
काली देवी की चिन्ता ---------- ८
चिन्तानिवारण हेतु काली का भगवान् के समीप गमन ---------- ८
भगवान् की देशना – काली की जिज्ञासा का समाधान ---------- ९
गौतम की जिज्ञासा – भगवान् का समाधान ---------- ११
चेलना का दोहद ---------- १३
श्रेणिक का आश्वासन ---------- १५
अभयकुमार का आगमन – दोहदपूर्ति का उपाय ---------- १६
चेलना देवी का विचार ---------- १८
बालक का जन्म – एकान्त में फेंकना ---------- १९
श्रेणिक द्वारा भर्त्सना ---------- १९
कूणिक का कुविचार ---------- २१
कालादि द्वारा स्वीकृति ---------- २२
कूणिक का चेलना के पादवन्दनार्थ गमन ---------- २२
श्रेणिक का मनोविचार ---------- २३
कुमार वेहल्ल की क्रीडा ---------- २५
पद्मावती की ईर्ष्या ---------- २६
वेहल्ल कुमार का मनोमन्थन ---------- २७
कूणिक राजा की प्रतिक्रिया ---------- २८
चेटक राजा का उत्तर ---------- २९
कूणिक राजा की चेतवनी ---------- ३१
युद्ध की तैयारी ---------- ३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काल आदि दस कुमारों की युद्धार्थ सज्जा ---------- ३२
कूणिक – युद्ध प्रयाण से पूर्व ---------- ३३
चेटक का गण-राजाओं से परामर्श ---------- ३५
चेटक राजा का युद्धक्षेत्र में आगमन ---------- ३७
युद्धार्थ व्यूहरचना ---------- ३७
द्वितीय अध्ययन
सुकाल कुमार का परिचय ---------- ४०
तृतीय से दशम अध्ययन
महाकाल आदि कुमारों सम्बन्धी वक्तव्यता ---------- ४१
द्वितीय वर्ग : कल्पावसंतिका
प्रथम अध्ययन
उत्क्षेप : जम्बू स्वामी का प्रश्न ---------- ४२
सुधर्मा स्वामी का उत्तर ---------- ४२
पद्मावती का स्वप्नदर्शन ---------- ४३
पद्म अनगार की साधना ---------- ४३
द्वितीय अध्ययन
महापद्मकुमार की जन्म-दीक्षा-साधना आदि ---------- ४५
तृतीय से दशम अध्ययन
शेष कुमारों का अतिदेशपूर्वक कथन ---------- ४६
तृतीय वर्ग : पुष्पिका
प्रथम अध्ययन
उत्क्षेप : जम्बू स्वामी का प्रश्न, सुधर्मा स्वामी का उत्तर ---------- ४७
चन्द्रविमान में ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र ---------- ४७
श्रावस्ती नगरी का अंगति (अंगजित) गाथापति ---------- ४९
अर्हत् पार्श्व का पदार्पण ---------- ५०
अंगजित की प्रव्रज्या, उपपात ---------- ५१
चन्द्र का भावी जन्म ---------- ५१
द्वितीय अध्ययन
सूर्य देव का समवसरण में आगमन ---------- ५३
सूर्य देव का भविष्य ---------- ५३
तृतीय अध्ययन
उत्क्षेप ---------- ५४
शुक्र महाग्र का पूर्वभव ---------- ५४
सोमिल का गृहत्याग का विचार ---------- ५६
सोमिल की दिशाप्रोक्षिक साधना ---------- ५९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमिल का नया संकल्प ---------- ६१
देव द्वारा सोमिल को प्रतिबोध ---------- ६२
सोमिल द्वारा पुनः श्रावकधर्मग्रहण---------- ६६
सोमिल की शुक्र महाग्रह में उत्पत्ति---------- ६६
चतुर्थ अध्ययन : बहुपुत्रिका देवी
बहुपुत्रिका देवी---------- ६८
गौतम की जिज्ञासा ---------- ६९
सुभद्रा सार्थवाही की चिन्ता ---------- ७०
सुव्रता आर्या का आगमन ---------- ७१
सुभद्रा की जिज्ञासा : आर्याओं का उत्तर ---------- ७१
आर्याओं का उपदेश : सुभद्रा का श्रमणोपासिकाव्रतग्रहण ---------- ७२
सुभद्रा का दीक्षा का संकल्प ---------- ७३
दीक्षाग्रहण---------- ७४
सुभद्रा आर्या की अनुरागवृत्ति ---------- ७६
सुभद्रा का पृथक् आवास ---------- ७७
बहुपुत्रिका देवी रूप में उत्पत्ति ---------- ७८
गौतम की पुनः जिज्ञासा ---------- ७९
सोमा की युवावस्था---------- ८०
सोमा द्वारा बहुसन्तान-प्रसव---------- ८१
सोमा का विचार---------- ८१
सुव्रता आर्या का आगमन ---------- ८२
सोमा का श्रावकधर्मग्रहण---------- ८३
सोमा का राष्ट्रकूट से दीक्षा के लिए पूछना---------- ८३
सोमा की प्रव्रज्या ---------- ८६
पंचम अध्ययन : पूर्णभद्र देव
उत्क्षेप ---------- ८८
पूर्णभद्र देव का नाट्यप्रदर्शन---------- ८८
षष्ठ अध्ययन : मणिभद्र देव
उत्क्षेप ---------- ९१
अध्ययन ७ से १०
दत्तादि का वृत्तान्त---------- ९३
चतुर्थ वर्ग : पुष्पचूलिका
प्रथम अध्ययन
उत्क्षेप ---------- ९४
भूता का दर्शनार्थ गमन ---------- ९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूता का प्रव्रज्या ग्रहण -- ९७
शरीरबकुशिका भूता -- ९८
भूता का अवसान और सिद्धिगमन -- ९९
अध्ययन २-१०
ह्री देवी आदि का वृत्तान्त ---१०१
पंचम वर्ग : वह्निदशा
प्रथम अध्ययन
उत्क्षेप ---१०२
द्वारका नगरी--१०३
रैवतक पर्वत --१०३
नन्दनवन उद्यान, सुरप्रिय यक्षायतन ---१०३
द्वारका नगरी में कृष्ण वासुदेव, बलदेव --१०४
ग्रन्थ की अन्तिम प्रशस्ति ---११३
परिशिष्ट
परिशिष्ट-१. महाबलचरितम्--११४
परिशिष्ट-२. दृढप्रतिज्ञ ---१३१
परिशिष्ट-३. व्यक्तिनामसूची ---१३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org